

ज्वालामुखी योग - 23

अव्यक्त बापदादा :-

» _ » विनाश ज्वाला की अग्नि से बचने का साधन - निर्भयता की शक्ति है। निर्भयता, विनाश ज्वाला के प्रभाव से डगमग नहीं करेगी। हलचल में नहीं लाएगी। **निर्भयता के आधार से विनाश ज्वाला में भयभीत आत्माओं को शीतलता की शक्ति देंगे। आत्मा भय की अग्नि से बच शीतलता के कारण खुशी में नाचेगी।**

» _ » विनाश देखते भी स्थापना के नजारे देखेंगे। उनके नयनों में एक आँख में मुक्ति-स्वीट होम दूसरी आँख में जीवन मुक्ति अर्थात् स्वर्ग समाया हुआ होगा। उसको अपना घर, अपना राज्य ही दिखाई देगा। लोग चिल्लाएंगे हाय गया, हाय मरा **और आप कहेंगे अपने मीठे घर में, अपने मीठे राज्य में गया। नर्थिंग न्यू। यह धुंधरू पहनेंगे।**

» _ » हमारा घर, हमारा राज्य - इस खुशी में नाचते-गाते साथ चलेंगे। वह चिल्लाएंगे और आप साथ चलेंगे। सुनने में ही सबको खुशी हो रही है तो उस समय कितनी खुशी में होंगे! तो चारों ही आग से शीतल हो गये हो ना? **सुनाया ना - विनाश ज्वाला से बचने का साधन है - 'निर्भयता'।**

» _ » ऐसे ही विकारों की आग के अंश मात्र से बचने का साधन है- अपने आदि-अनादि वंश को याद करो। अनादि बाप के वंश सम्पूर्ण सतीप्रधान आत्मा हूँ। आदि वंश-देव आत्मा हूँ। देव आत्मा 16 कला सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी है। तो अनादि-आदिवंश को याद करो तो विकारों का अंश भी समाप्त हो जायेगा। (21.02.1985)

➤ भय

» _ » जितने भी दिव्य गुण है, उसमे सबसे पहले किसे रखा गया है ?

→ “अभय” / “निर्भयता”

» _ » मनुष्य को भय किस किस चीजो से होता है?

- खोने का भय
- स्वजनों की बीमारी का भय
- स्वजनों की मृत्यु का भय
- मित्र सम्बंधी की बीमारी का भय
- मित्र सम्बंधी की मृत्यु का भय
- स्वयं की बीमारी का भय
- स्वयं की मृत्यु का भय
- स्वयं की कमजोरी
- असुरक्षा का भाव

■ मेरा क्या होगा ??

► अगर मैं बीमार पडा तो मेरी सेवा कौन करेगा ?

► कोई मेरा ध्यान रखेगा की नई रखेगा ?

► बुढ़ापे में मेरा क्या होगा ?

→ भविष्य का भय

→ ACCIDENT का भय

→ प्राकृतिक आपदा का भय

→ FINANCIAL LOSS का भय

→ अभी जो सन्मान प्राप्त होता है उसे अगर छीन लिया जाय तो ?

→ जानवरों का भय

■ चीपकली

■ साप

■ कोकरोज

■ भालू

→ भटकती हुई आत्मा का भय

→ दुर्घटना का भय

→ कोई स्थान का भय

→ भूत-प्रेत का भय

→ अँधेरे का भय

→ आसुरी शक्तियों का भय

→ चोरी का भय

→ आरोप का भय

→ पद प्रतिष्ठा का भय

→ खोने का भय

→ BLAME का भय

→ असफलता का भय

→ समाज का भय

→ PUBLIC OPINION का भय

→ PUBLIC FEEDBACK का भय

→ पुराने संस्कार जो वापस कही इमर्ज न हो जाय उसका भय

→ भक्ति मार्ग को छोड़ ज्ञान मार्ग में आ गये

■ तो गुरुओं के कोप, शार्प का भय

■ कुलदेवी, कुलदेवता कही नाराज न हो जाय उसका भय

■ घरवाले कही नाराज न हो जाय, उसका भय

→ साधनों के खोने का भय

→ वैभव, धन, सम्पत्ति के खोने का भय

→ युद्ध का भय

- आतंकवादियों के हमले का भय
- POLLUTION का भय
- GLOBAL WARMING का भय
- इन्कमटेक्स वालो का भय
- POLICE CASES का भय
- COURT CASES का भय
- आरोप का भय
- संतान के भविष्य का भय
- UNEMPLOYMENT का भय
- हमसे कोई आगे न बढ़ जाय उसका भय
- पास्ट में कोई घटना हुई थी, फिर से न हो जाय उसका भय
- अपनी अरछी स्थिति खोने का भय
- माया के सूक्ष्म रूप का भय
- विकारो के वार का भय
- अज्ञात का भय

- कारण हमें पता नहीं है

- फिर भी बहुत भय लगता है

→ कुछ भय पूर्व जन्मों के होते हैं, जैसे की

- पानी का भय

- अकेलेपन का भय

- उचाई का भय

- अँधेरे का भय

- आवाजों का भय

➤ HOW TO OVERCOME FEAR ?

➡ _ ➡ भय से मुक्त होने के लिये फर्स्ट हमें कारण को समझना होगा

→ UNDERSTANDING

- उस भय को समझना है

- की भय है किस बात का ?

- उसका सामना करना है

- ▶ UNDERSTAND, KNOW & FACE

- ▶ उसकी आँखों में आंख डालकर देखो तो

- ▶ वो खुद ब खुद भस्म हो जायेगा

- COMPLETE UNDERSTANDING IS COMPLETE

FREEDOM

- भय का कारण अज्ञात है

- हमें जिस चीज से भय लगता है
 - ▶ हमें वही करना चाहिये
 - ▶ तो धीरे धीरे भय खुद खत्म होता जायेगा
 - ▶ तब तक करते रहना है
 - ▶ जब तक हम उस भय से मुक्त न हो जाय

→ ACCEPT THE TRUTH

- सत्य को स्वीकार करना
- सत्य को जानना
- सत्य को समझना
- सबसे पहले भय को समझना
- जीवन की वास्तविकता को स्वीकारना है, उससे भागना नहीं है
 - ▶ की मेरे साथ तो कभी बुरा हो ही नहीं सकता
 - ▶ किसी के साथ हुआ,
 - ▶ तो वह एक दिन मेरे साथ भी ऐसा हो सकता है
 - ▶ जीवन अनिश्चित है
 - ▶ अनिश्चितता ही जीवन की एकमात्र निश्चित चीज है

→ CREATE OPPOSITE THOUGHT / IMAGINATION

- किसी भी चीज से भय है, तो उसके विरोध भाव उत्पन्न करना
 - ▶ की मुझे कुछ नहीं होगा
- जिस चीज से भय है
 - ▶ वो चीज खुद को करता हुआ
 - ▶ VISUALISE करना
- जैसे लोकल ट्रेन से भय है
 - ▶ तो लोकल ट्रेन में खुद को बैठा हुआ देखना
 - ▶ की मैं ट्रेन में बैठ के जा रहा हूँ
- भीड़ से भय है
 - ▶ तो देखो मैं भीड़ के बीच से जा रहा हूँ
- कोई लोगो से भय है
 - ▶ तो देखो उनके बीच में मैं खड़ा हूँ
- एक भय के संकल्प से मुक्त होने के लिये
 - ▶ एक नया संकल्प
 - ▶ नई कल्पना
 - ▶ नया दृश्य
 - ▶ नया VISUALISATION खड़ा करना पड़ेगा
- अगर कोई चीज से भय है

- ▶ तो वो चीज करता खुद को देखो
- ▶ की मैं यह कर रहा हु
- ▶ तो स्वतः ही उस भय से मुक्त हो जायेंगे

→ आत्माभिमान की स्थिति

- मैं आत्मा अजर, अमर, अविनाशी हु
- ▶ यह देह जो है, वो आज है कल जायेगा ही

→ परमात्म छत्रछाया

- स्वयं भगवन हमारा BODYGUARD है
- वो हमारा रक्षक है
 - ▶ उसके होते हुये हमे कुछ भी नहीं हो सकता है
- जिन्होंने अपने जीवन को ईश्वरीय कार्य में अर्पित कर दिया है
 - ▶ उनके जीवन का सम्पूर्ण दाहित्य भगवान का है
- बाबा के होते हुए उसके बच्चो पर
 - ▶ जरा सी आंच भी नहीं आ सकती है
- स्वयं को कभी अकेला समझना ही नहीं है
 - ▶ जहा हम जा रहे है
 - ▶ उसकी छत्रछाया निरंतर हमारे ऊपर है ही

→ स्वमान का अभ्यास

- मैं आत्मा मास्टर सर्वशक्तिमान हु
- मैं शिवशक्ति हु
- मैं आत्मा विघ्नविनाशक हु
- मैं आत्मा असुरसंहारिणी हु
- मैं आत्मा महाकाली हु
- मुझमे अनंत शक्तियों का भण्डार समाया हुआ है
 - ▶ कोई विकारी मुझे स्पर्श भी नहीं कर सकता है

→ राग और द्वेष

- जब हमारा राग छुट जायेगा
- वैराग्य उत्पन्न होगा
 - ▶ तब भय जायेगा
 - ▶ मेरा कुछ है ही नहीं
 - ▶ न यह घर मेरा है
 - ▶ ना यह बच्चे मेरे है
 - ▶ मेरा कोई मित्र सम्बन्धी भी नहीं है
 - ▶ ना भाई बहन
 - ▶ न माँ बाप

- ▶ न पति पत्नी
- ▶ कोई मेरा नहीं है
- ▶ अकेले आय है, और जाना भी अकेले ही है
- ▶ तो ही निर्भयता आयेगी

→ 5 स्वरूपों का अभ्यास

- पांचो ही स्वरूप में निर्भयता है
- अनादी स्वरूप
 - ▶ आत्मा निर्भय है
- देवता स्वरूप
 - ▶ देवताओ को तो कोई भय हो ही नहीं सकता
- पूज्य स्वरूप
- पूज्य स्वरूप में, मैं हनुमान हु
 - ▶ हनुमान को भला कोई भय हो सकता है ?
- ब्राह्मण स्वरूप
 - ▶ ब्राह्मण अर्थात हमे किसने चुना ?
 - ▶ किसके हम बच्चे है ?
 - ▶ बाबा के बच्चो को भला किसका भय
- फरिश्ता स्वरूप
 - ▶ फरिश्तो को तो देह ही नहीं है
 - ▶ उसका तो कुछ है ही नहीं
 - ▶ सारे रिश्ते एक बाप से ही है
 - ▶ तो उसे भला किसका डर...

→ भय से मुक्ति का साधन है वैराग्य...

→ यदि मोह समाप्त हो जाय, तो भय भी समाप्त हो जायेगा...

→ भय से मुक्त होने, सर्व इरछाओ से मुक्त होना पड़ेगा...

→ भय से मुक्त होने ड्रामा का ज्ञान पक्का होना चाहिये...

→ भय से मुक्ति का साधन है साक्षीभाव...

- परिस्थितिया आ रही है, जा रही है
 - ▶ हम उससे बिलकुल अलग है

